Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

APP–1004

M.A. (Previous) Examination, 2022

HINDI

Paper - IV

(मध्यकालीन काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) "'विनयपत्रिका' तुलसीदास का आत्मनिवेदन है।" कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

(ii) ब्रह्म और जीव के सम्बन्ध के विषय में तुलसीदास जी की मान्यता को स्पष्ट कीजिए।

(iii) गीतिकाव्य के तत्त्वों के आधार पर संक्षेप में सूर के काव्य का विश्लेषण कीजिए।

(iv) 'सूर-सौरभ' में आये 'अपुनपौ आपनहिं बिसरयो' पद के माध्यम से सूर ने क्या भाव व्यक्त किया है ?

(v) क्या मीरां पदावली में लोक चेतना की अभिव्यक्ति हुई है ? यदि हाँ, तो कैसे ?

(vi) क्या मीरां के आराध्य कृष्ण ब्रह्मरूप में ही चित्रित हुए हैं ? स्पष्ट उत्तर दीजिए।

(vii) बिहारी सतसई का महत्त्व किस आधार पर प्रमाणित किया जा सकता है ? स्पष्ट कीजिए।

(viii) ''बिहारी नीतिज्ञ थे।'' सतसई में आये दोहों से प्रमाणित कीजिए।

(ix) ''घनानन्द का प्रेम मन से मन तक यात्रित हुआ है।'' इस कथन पर विचार कीजिए।

(x) घनानन्द की भाषा में नवीनता पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

खण्ड–ब

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

2. जाके प्रिय न राम वैदेही।

सो छांड़िये कोटि बैरी-सम, जद्यपि परम सनेही॥

तज्यो पिता प्रहलाद, विभीषण, बंधु भरत-महतारी।

बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज-बनितन्हि, भये मुद मंगलकारी।

नाते नेह राम के मनियत, सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं॥

अंजन कहा आँखि जेहि फूटै, बहुतक कहाँ कहाँ लौं॥

तुलसी सो सब भाँति परम हित पूज्य प्रानते प्यारो।

जासों होय सनेह राम-पद, एतो मतो हमारो॥

3. मन पछितैहै अवसर बीते।

दुरलभ देह पाइ हरिपद भजु, करम, बचन अरु ही ते॥

सहसबाहु दस बदन आदि नृप बचे न काल बलीते।

हम-हम करि धन-धाम संवारे, अन्त चले उठि रीते॥

सुत-बनितादि जानि स्वारथरत, न करू नेह सबही ते॥

अंतहु तोहि तजैंगे पामर। तू न तजै अबही ते॥

अब नाथहिं अनुरागु, जागु जड़, त्याग दुरासा जीते।

बुझै न काम अगिनी-तुलसी-कहुँ, विषय भोग बहु घीते॥

4. चरन कमल बंदौ हरि राई।

जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे कूं सब कुछ दरसाई॥

बहिरो सुनै मूक पुनि बोलै, रंक चले सिर छत्र धराई।

सूरदास स्वामी करुनामय, बार-बार बंदौ तेहि पाई॥

5. मेरो मन अनत कहाँ सुख पावे।

जैसे उड़ि जहाज को पंछी फिरि जहाज पर आवै॥

कमल नैन को छाँड़ि, महातम और देव को ध्यावै।

परम गंग को छाँड़ि पियासो दुरमति कूप खनावै॥

जिन मधुकर अम्बुज रस चाख्यो क्यों करील फल खावै।

सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी-कौन दुहावै।

6. मैं तो गिरधर के घर जाऊँ।

गिरधर म्हारो साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ॥

रेण पड़े तब ही उठि जाऊँ भोर भये उठि आऊँ।

रेण-दिनाँ वाके संग खेलूँ ज्यूँ-त्यूँ ताहि रिझाऊँ॥

जो पहिरावे सोई पहरूँ, जो देवौ सो खाऊँ।

मेरी उण की प्रीत पुराणी, उण बिन पल न रहाऊँ।

जहाँ बैठावे तित ही बैठूँ, बैचें तो बिक जाऊँ॥

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बार-बार बलि जाऊँ॥

7. तब तौ छवि पीवत जीवत है, अब सोचन लोचन जात जरे।
हित पोष के तोष सु प्रान पले, बिललात महा दुख दोष भरे॥
घनआनँद मीत सुजान बिना, सब ही सुख साज समाज टरे।
तब हार पहार से लागत हैं, अब आनि के बीच पहार भरे॥

8. बैठि रही अति सघन वन, पैठि सदन वन माँहि।
देखि दुपहरी जेठ की, छाँहाँ चाहति छाँह॥
कागद पर लिखत न बनत, कहत संदेसु लजात।
कहि है सब तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात॥
पत्रा ही तिथि पाइयै वा घर के चहुं पास।
नित प्रति पून्योई रहै, आनन ओप उजास॥

खण्ड–स

नोट :– निम्नलिखित चार में से किन्ही **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

9. विनयपत्रिका के आधार पर तुलसीदास की समन्वय-भावना को समझाइए। आवश्यक एवं उचित उदाहरणों से अपने मत को पुष्ट कीजिए।

10. ''सूर में जितनी सहृदयता है, उतनी ही वाक्विदग्धता भी है।'' स्पष्ट कीजिए।

11. ''घनानन्द की विरह वेदना निस्सीम गगन के सदृश विस्तृत और सागर की गहराई जैसी अथाह है।'' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में घनानन्द की विरह भावना को स्पष्ट कीजिए।

12. ''कल्पना की समाहार शक्ति और भाषा की समास शक्ति का अद्भुत मिश्रण बिहारी सतसई में मिलता है।'' इस कथन की उदाहरण सहित पुष्टि कीजिए।